THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-05 | Issue-01 | April-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i1.56

धर्मान्तरण और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

डॉ0 मनोरंजन कुमार भारती
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा विभाग) रामेश्वर लक्ष्मी महतो टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, मिर्जापुर, रोसड़ा, समस्तीपुर, बिहार
Email:- manoranjanbharti6@gmail.com

सार :

धर्मान्तरण की घटनाएं मानव सभ्यता जितनी ही पुरानी है। मेसोपोटामिया और मिश्र जैसी प्राचीन सभ्यताओं में भी धर्मान्तरण के उदाहरण मिलते हैं। इन प्राचीन समाजों में लोग विजय, व्यापार और आध्यात्मिक खोज के कारण अपने धार्मिक विश्वासों को परिवर्तित करते थे। ईसाई धर्म, इस्लाम आदि जैसे कुछ धर्म प्रचारकों के मिशनरी कार्यो के कारण धर्मान्तरण में वृद्धि हुई। आज विश्व के पांच प्रमुख धर्म, सनातन धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम धर्म, बौद्ध धर्म और यहूदी धर्म हैं। ईसा पूर्व की प्रारंभिक शताब्दियों में, प्रेरित पौलूम जैसे मिशनरियों के प्रयासों से ईसाई धर्म रोमन साम्राज्य और उसके बाहर तेजी से फैला। पैगंबर मोहम्मद की मृत्यु के बाद 7वीं शताब्दी में इस्लाम का विस्तार अरब, प्रायद्वीप, उत्तरी अफ्रीका, मध्य पूर्व और दक्षिण एशिया में तेजी से हुआ। मध्य कालीन और प्रारंभिक आधुनिक काल में, विजय, उपनिवेशीकरण और मिशनरी गतिविधियों के द्वारा धर्मान्तरण के माध्यम से धर्म परिवर्तन जारी रहा। यूरोपीय खोजकर्ताओं, व्यापारियों और मिशनरियों ने अमेरिका, अफ्रीका, एशिया और ओशिनिया में ईसाई धर्म के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्तमान समय में भी अंतरधार्मिक सम्पर्क, आध्यात्मिकता की खोज और धर्मान्तरण के आधुनिक तरीकों के कारण धर्मान्तरण होते रहते हैं।

शब्द कोश *: धर्मान्तरण, आध्यात्मिकता, सार्वभौमिक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, सम्प्रदाय, अलौकिक, धर्मानुयायियों, प्रागैतिहासिक. ऋग्वेद, पंथनिरपेक्ष संस्कृति।*

प्रस्तावना :

धर्मान्तरण वर्तमान में चर्चा का विषय बना हुआ है और इस पर राष्ट्रीय स्तर पर बहस हो रही है। धर्मान्तरण के विषय पर संविधान की अनुच्छेद–25 (1) के प्रतिपादन के दौरान संविधान सभा में पहले बहस हुई थी। इस अनुच्छेद के द्वारा भारत के प्रत्येक नागरिक को अपनी अंतर्रात्मा के अनुसार किसी धर्म को अपनाने और उसका प्रचार करने का मौलिक अधिकार दिया गया है। इस धरा के प्रचार (प्रोपगेट) शब्द का विरोध सर्वश्री के. एम. मुंशी, लोकनाथ मिश्र, ए.के.मोइया आदि जाने– माने विद्वानों ने किया था। उनका तर्क था कि प्रचार के अधिकार का दुरूपयोग, विस्तारवादी धर्मानुयायियों के द्वारा धर्मान्तरण कराने हेतु किया जायेगा और भविष्य में साम्प्रदायिक तनाव बढ़ेगें जिस कारण एक बार देश विभाजित हो चुका है। '**प्रचार**' शब्द भविष्य में देश की एकता और अखण्डता पर संकट पैदा करेगा।[1] आज 79 वर्षों के बाद भी यह स्पष्ट है कि उनकी शंकाएं निर्मूल नहीं थी।

धर्मान्तरण की चर्चा करने से पहले यह जानना आवश्यक है कि धर्म क्या है? जैसे प्रकृति और पदार्थ की खोज विज्ञान है उसी प्रकार आत्मा–परमात्मा की खोज **'धर्म'** है। इसलिए धर्म तो एक ही है, जैसे विज्ञान एक ही है। जो–जो

व्यक्ति संबोधि पा लेते हैं वे प्रज्ञा, पुरुष दृश्य और अदृश्य के बीच, बोधगम्य और अगोचर के बीच, धरती और आकाश के बीच सेतु बन जाते हैं। उनमें अलौकिक ज्योति और परमात्मा की झलक दिखाई पड़ने लगती है। वैसे महान व्यक्तियों को हम अवतार, मसीहा, पैगम्बर आदि के नामों से विभूषित करते है। उनके वचनों को हम शास्त्र कहते हैं। उनके देहान्त के बाद ज्योति विलीन हो जाती है, परन्तु उनके आस–पास और उनके नाम पर हम सम्प्रदाय तथा परम्पराएं निमित्ति कर लेते हैं।[2] धर्म तो एक ही है जैसे प्रकाश एक हैं, परंतु दीपक के आकार के भेद से अनन्त सम्प्रदाय पैदा हो गये है। अब हम वास्तविक धर्म को छोड़कर सम्प्रदाय को धर्म कहने लगते हैं। प्रत्येक सम्प्रदाय की अपनी परम्पराएं, धरणाएं और मान्यताएं हैं और उसके अनुयायी उनके पूर्वाग्रहों से पीड़ित हो। स्वयं को श्रेष्ठ समझने की मनौवैज्ञानिक चाह के कारण उनमें कट्टरता पैदा हुई है और सम्प्रदायिक संघर्षों का यही कारण है। संघर्ष के कारण संख्या का गणित महत्वपूर्ण हो गया है और कुछेक विस्तारवादी सम्प्रदाय धर्मान्तरण कराने पर ही सर्वाधिक जोर देते हैं।[3]

धर्म के नाम पर अनेक जघन्य कार्य किये गये हैं। धर्म की रक्षा के नाम पर ईसा को सूलीपर लटकाया गया। सुकरात को विषपान कराकर और मंसूर को अंग– अंग काटकर प्राणदण्ड दिया गया। उल्लेखनीय है कि ईसा मसीह ईसाई नहीं थे, बुद्धदेव, बौद्ध नहीं थे, नानक सिख नहीं थे एवं महावीर जैन नहीं थे। जो स्वयं संबोधि एवं सत्य से दूर हैं वे ही हिन्दू, ईसाई, बौद्ध, जैन, सिख आदि है। ये धर्म को जानने वाले नहीं हैं, मानने वाले हैं। यह अनुभवी नहीं है, साम्प्रदायिक हैं, असली नहीं है, नकली है। यह अकारण नहीं है कि बुद्धिजीवियों में धर्म के प्रति उपेक्षा है, क्योंकि जो धर्म के नाम पर दिखाई पड़ता है वह न सत्य है, न शिव है और न सुंदर है। मनुष्य के विकास का मार्ग विज्ञान है जिसे तथाकथित धर्मों ने सदा आगे बढ़ने से रोका है। जब गैलीलियो ने घोषणा की कि, सूर्य नहीं घूमता है, बल्कि पृथ्वी घूमती है तब उसे इस अपराध के लिए पकड़कर पोप के दरबार में हाजिर किया गया। पोप ने कहा कि बाइबिल में लिखा है कि पृथ्वी स्थिर है और सूर्य चलता है और तुमने उल्टा क्यों लिखा है? पोप ने गैलिलियों को अपने पुस्तक में तदनुसार संशोध्न करने का अदेश दिया और नहीं करने पर प्राणदण्ड देने की धमकी दी क्योंकि बाइबिल का एक वचन असत्य प्रमाणित होगा तब अन्य वचनों पर भी संदेह उठेंगे और ईसा मसीह के प्रति लोगों का विश्वास तथा पोप के प्रति सम्मान घट जायेगा। यह कैसी विडम्बना है कि धर्म सत्य पर नहीं विश्वास पर आधारित है।[4] इस युग के महान वैज्ञानिक आइस्टीन से एक बार पूछा गया कि वैज्ञानिक और धार्मिक में क्या फर्क होता है। आईस्टीन ने कहा कि यदि वैज्ञानिक से सौ प्रश्न पूछे जायेगे तब वह नब्बे प्रश्नों का उत्तर देगा कि नहीं मालूम और दस प्रश्नों का उत्तर देगा कि अन्वेषण से अभी तक इतनी जानकारी मिली है, परन्तु आगे और जानकारी मिलने की संभावना है। लेकिन यदि धार्मिक से सौ प्रश्न पूछ जायेंगे तब एक सौ एक उत्तर देगा और कहेगा कि यही सत्य है, यही सिद्धांत है और अन्यथा हो ही नहीं सकता।[5] यह आश्चर्यजनक है कि कुछ सम्प्रदाय अपने धर्मग्रन्थ के वचन को ईश्वर को अंतिम वचन कहते है आगे सुधार तथा विकास को अवरूद्ध कर समाज में कट्टरता और अंधविश्वास फैलाते हैं।

इस युग के महान बुद्धिवादी बरट्रेंड रसेल ने एक पुस्तक लिखी है–Why I am not a christian? और पोप आज तक उस पुस्तक में उठाये गये प्रश्नों के उत्तर नहीं दे सकें हैं। दूसरी तरफ उनकी घोषित योजना है कि सम्पूर्ण विश्व को ईसाईयत में परिवर्तित करना है। उन्होंने महात्मा गांधी को ईसाई बनाने हेतु वर्षों तक अपने विद्वान पादरियों को भेजकर उन पर लगातार दबाव डलवाया जिसे सम्पूर्ण भारत को आसानी से शीघ्र ईसाई बनाया जा सके। यह बात दूसरी है कि उनकी यह योजना सफल नहीं हो सकी और वे शास्त्रार्थ में महात्मा गांधी को नहीं पराजित कर सके। [6] संसार में कुल 300 धर्म (सम्प्रदाय) हैं और प्रत्येक की मान्यताएं एक–दूसरे के विरूद्ध हैं। धर्म के ठेकेदारों ने इस प्रकार प्रत्येक

व्यक्ति के विरूद्ध 299 धर्म खड़ा कर उसको नर्क भेजने का पुख्ता–प्रबन्ध किया है। नर्क का भय दिखाकार और स्वर्ग का प्रलोभन देकर वे जनसाधरण का शोषण करते हैं। धर्म तो एक ही है परन्तु उसके अनेक सम्प्रदाय बनाकर धर्म को अनिर्णित दिखाना उनका षड्यंत्र है। गत दो हजार वर्षों में छोटे–बड़े, ढ़ाई हजार युद्ध धर्म के नाम पर लड़े गये हैं और करोड़ों लोगों की हत्या की गयी है। ईसा मसीह, सुकरात, मंसूर, सरमद, अर्जुन देव आदि को प्राणदण्ड देने वाले हत्यारे अधार्मिक लोग नहीं थे।[7] ये धर्मगुरु और राजा थे तथा उनके अनुयायी थे।

भारत की प्रतिभा प्रागैतिहासिक काल से आत्मा– परमात्मा की खोज में संलग्न रहने के कारण उच्चतम शिखर प्राप्त कर सका। हमारे ऋषियों ने पाया कि सभी आध्यात्मिक मार्ग उपमार्ग सही हैं और परमात्मा तक ले जाते हैं। अतः यहाँ कोई विवाद और संघर्ष नहीं थे। समाज में परम सहिष्णुता रही है। हमारे यहाँ तो आचार्य वृहस्पति, और चार्वाक को भी प्रतिष्ठा दी गयी जो अनीश्वरवादी थे जिन्हें हम नास्तिक कहते हैं। हमने बुद्धदेव और महावीर को भी भगवान माना जिन्होंने वेद–पुराणों और आत्मा–परमात्मा का ही खंडन किया। भारतीय दर्शन सर्वस्वीकार का रहा हैं। परंतु आज ईसाईयत और इस्लाम के विस्तारवादी षड़यंत्र और हथकण्डों के कारण हम प्रतिक्रियावादी कहे जा रहे हैं। चूंकि भारत ने सभी धार्मिक मार्गो को सही पाया था अतः धर्मान्तरण अर्थहीन था। इसलिए हमारे धर्मशास्त्रों में धर्मान्तरण का कोई उल्लेख और निर्देशन नहीं है। उन्नीसवीं सदी के अन्त में प्रथम बार हिन्दुओं का शोषण रोकने हेतु स्वामी दयानंद आर्य समाज के संस्थापक ने अपने धर्मग्रंथ **सत्यार्थ प्रकाश** में इसका उल्लेख किया और हिन्दुओं में पुनरार्वतन की प्रक्रिया आरंभ की। परन्तु ईसाईयत और इस्लाम के द्वारा बहकाने–फुसलाने के अतिरिक्त हिंसा का सहारा आरंभ से ही लिया गया और सारे संसार में व्याप्त आतंकवाद इसी का परिणाम है। विश्व मानवाधिकार संगठन का एक अंग **एशिया वाच** ने वर्ष–1997 अपने प्रतिवेदन में एक धर्म को आतंकवाद का पर्यायवाची लिखा है।[8] उसके अनुसार उस धर्म के देशों में मानवाधिकार नाम की कोई चीज नहीं है।

कोई व्यक्ति विभिन्न धर्मग्रन्थों को पढ़कर और उनकी जीवन पद्धतियां देखकर धर्म परिवर्तन करता है, वह ठीक हैं परंतु उसका पुनरावर्तन का अधिकार समाप्त नहीं होता है। भारत में धार्मिक स्वतंत्रता की दुहाई देने वाले अमेरिका और यूरोप में '**हरे कृष्णा आंदोलन**' का कठोर विरोध किया जा रहा है। वहाँ आचार्य रजनीश और महर्षि महेश योगी के अनुयायी वर्ग को प्रताड़ित किया गया। वहाँ चर्चो ने गुहार मचा रखी है कि ईसाईयों को हिन्दू बनाया जा रहा है। भारतीय ध्यान कार्यक्रमों पर शिक्षण संस्थाओं में प्रतिबंध लगा दिया गया है। हरे कृष्ण आंदोलन में भाग लेनेवाले का विक्षिप्त कहकर घरों में बंदकर रखा जाता है। उनको शामक इंजेक्शन, बिजली के झटके और अमानवीय यातनाएं देते हैं। वहाँ जासूसों और सम्मोहन विशेषज्ञों के अनेक संगठन सक्रिय हैं जो ईसायत छोड़ने वालों को वापस लाने का व्यवसाय चलाते हैं।[9] भारत में वे ही ईसाई पादरी अशिक्षित गरीबों को फंसकर ईसाई बनाते हैं और कहते हैं कि यह धार्मिक स्वतंत्राता है।

ईसाइयों ने अपने शासनकाल में भारत का गलत इतिहास लिखवाया जिसके अनुसार आर्य भारत के मूल निवासी नहीं है और वे मध्य एशिया से करीब पांच हजार वर्ष पूर्व आये थे। यह लिखवाकर वे प्रमाणित करना चाहते थे कि जैसे हम विदेशी वैसे तुम विदेशी और हमारा विरोध करने का तुम्हारा नैतिक अधिकार नहीं है। लोकमान्य तिलक ने इस इतिहास को चुनौति दी। उन्होंने ऋग्वेद से एक उद्धरण किया जिसमें ग्रह–नक्षत्रों की उस स्थिति का वर्णन है जिसकी पुनरावृत्ति 90 हजार वर्ष पूरे होने पर होगी। खगोलविज्ञान इसका समर्थन करता है। इससे स्पष्ट है कि करीब लाख वर्ष पूर्व से हम सुशिक्षित हैं और भारत के वासी है ऋग्वेद आर्यों का धर्मग्रन्थ है, इसपर कोई विवाद नहीं है परंतु आज तक

किसी पोप–पादरी ने तिलक जी के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। फिर भी सत्ता और प्रचार के सहारे वे ही सफल रहे क्योंकि आम शिक्षित भारतीय भी यही मानते हैं कि हम मध्य एशिया से आये थे और यही इतिहास अभी भी पढ़ाया जाता है। अब तो मुसलमान भी भारत का नया इतिहास लिखवा रहे हैं। कुछ भारतीयों से लिखवा रहे हैं कि आलमगीर, औरंगजेब न्यायप्रिय, लोकप्रिय, सदाचारी, चरित्रवान और धर्मनिरपेक्ष सम्राट था, वाराणसी और उज्जैन में उन्होंने मंदिर बनवाये थे और धर्मान्ध होने, मंदिर तोड़वाने तथा बलात् धर्म परिवर्तन कराने के आरोप उसके विरूद्ध गलत है। ऐसा प्रचार अब जोरो पर है कि औरंगजेब अच्छा और अकबर बुरा और चरित्रहीन शासक था। वह हिन्दुओं का पिट्ठु था और असली मुसलमान नहीं था, वह इतिहास पाकिस्तान में पढ़ाया जा रहा है। [10] यह सब भारत के विरूद्ध सुनियोजित षड़यंत्र है।

अपने पक्ष में धर्मान्तरण कराने हेतु संसार भर में ईसाइयों और मुसलमानों के बीच उन्मादी संघर्ष जारी है। लेबनान, साइप्रस, जॉर्जिया, इथोपिया, चेचेन्या, बोस्निया, फिलिपींस, इंडोनेशिया, आर्मेनिया और अफ्रीका के अनेक देशों से चल रहे गृहयुद्ध और अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद प्रत्यक्ष प्रमाण है। केन्या के भूतपूर्व राष्ट्रपति **जोमो केन्याता** कहते थे कि जब हमारे यहाँ ईसाई मिशनरी आये थे तब उनके हाथों में बाइबिल थी और हमारे हाथों में हमारा देश था परंतु बाद में स्थिति उलट दी गयी। अब हमारे हाथों में बाइबिल है और ईसाई मिशिनरी के हाथों में हमारा देश है। क्या यह छिपा हुआ तथ्य है कि पूर्वोत्तर क्षेत्र के नेता ए.जेड फिजो ने ईसाई मिशिनरी के मार्गदर्शन में ही भारत को विभाजित कर अलग देश की मांग उठायी थी? क्या मिजोरम, नागालैंड, मेघालय आदि में भारत की अखण्डता पर खतरा और गुरिल्ला युद्ध धर्मान्तरण के कारण नहीं है? वर्ष 1954 में मध्य प्रदेश सरकार ने न्यायामूर्ति **'बीóएसóनिमोही'** की अध्यक्षता में एक आयोग गठित किया था जिसने ईसाई मिशिनरी की गतिविधियों की जांच की थी। जांच प्रतिवेदन के अनुसार आदिवासियों को ईसाई बनाने हेतु बहुत गलत हथकंडे अपनाये गये थे और ईसाई मिशिनरी राष्ट्र के अंदर दूसरा राष्ट्र निर्मित कर रहे थे। उसके बाद भी धर्मान्तरण पर रोक नहीं लगायी गयी। उसके द्वारा चलाये जा रहे स्कूल और अस्पताल का उद्देश्य सेवा नहीं बल्कि धर्मान्तरण कराना है, यह सर्वविदित है। स्कूल और अस्पताल के अतिरिक्त अब तो चर्च को भी सीधे धर्मान्तरण का औजार बना दिया गया है। वहां बुलाकर पफेथ हिलिग कराकर फीस के रूप में आदिवासियों से धर्म परिवर्तन माँगा जाता है। [11]

ईसाईयत और इस्लाम के घोषित कार्यक्रम अनुसार भारत उनकी हिट लिस्ट में उपर है। यहां स्कूल, अस्पताल, मदरसा, चर्च और मस्जिद बनाने हेतु विदेशों से अकूत धन आ रहा है। पोलैंड के तर्ज पर यहां भी धर्मनिरपेक्षता के नाम पर राजनीति करने वाले दलों को भारी धनराशि प्राप्त हो रही है। उनका आंकड़ा हम इसलिए नहीं जानते हैं क्योंकि उसके लिये जांच और अंकेक्षण कराने की आवश्यकता है जो कराने में हम असमर्थ है। आंतरिक सुरक्षा मंत्री की हैस्यित से यह करने–कराने हेतु निर्देश जारी करने पर श्री अरूण नेहरू को मंत्री पद से हाथ धोना पड़ा था। हमारी असमर्थता के कुछ कारण है। ईसाई देश हमारे महाजन हैं और हम उसके कर्जदार है। विकसित देशों के सामने हम भिखारी बनकर खड़े है और हम उनको नाखुश नहीं कर सकते। दूसरा कारण यह है कि सभी राजनैतिक दल विभिन्न स्रोतो से अवैध धन प्राप्त करते हैं। [12] अतः जांच कराने पर सत्ताधारी दल भी नग्न हो जायेगा। हम स्वार्थ और वोट की राजनीति करते है और राष्ट्रीयता और राष्ट्र का भविष्य हमारे लिए अर्थहीन है।

धर्मान्तरण के रूप में राष्ट्रीयता और राष्ट्रहित में भारत की एकता और अखण्डता पर आनेवाले खतरों से राष्ट्र को हमेशा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आगाह करता आ रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जिस तरह से हिन्दू अधिकारों की

बात करता है तथा स्वदेश में ही उपेक्षित और उत्पीड़ित हिन्दुओं को जागरूक कर रहा है वह पूर्णतः राष्ट्रहित में है। हमें जिस बाहुलतावादी, पंथनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक भारत पर गर्व है उसका यह स्वरूप संविधान के कारण नहीं है बल्कि हिन्दुत्व की बहुलतावादी सनातन संस्कृति के कारण संविधान, पंथनिरपेक्ष सम्मानित है। भारत का सतत् अस्तित्व हिन्दू दर्शन पर आधरित है। यूरोप में रोमन साम्राज्य की छत्रछाया में ईसाईयत ने मूर्तिपूजकों के साथ लड़ाई लड़ खुद को स्थापित किया। लिथुआनिया में 14वीं सदी तक मूर्ति पूजक विद्यमान था, किन्तु ईसायत उसे निगल गई। वह एक बर्बर सामूहिक नरसंहार और धर्मान्तरण का दौर था। जब श्वेत ईसाईयत लेकर अमेरिका पहुँचे और वहाँ के निवासियों को ईसाई बनाया। मध्यकाल से लेकर आज भी इस्लामी बर्बरता और हिंसा के बल पर धर्मान्तरण का साक्षी है। इस तरह की असहिष्णुता के लिए हिन्दू दर्शन में कभी कोई स्थान नहीं रहा हैं हिन्दुत्व और उससे जुड़े संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को फासीवादी और साम्प्रदायिक संज्ञा देना वास्तव में भारत के सनातन चरित्र को कमजोर करने का षड़यंत्र है।[13] इस कुप्रचार का लक्ष्य प्रजातांत्रिक और सहिष्णु मूल्यों को कमजोर कर मध्यकालीन कट्टरता और धर्मान्तरण को वापस लाना है। आज भारत सहित दुनिया के अधिकांश देश इस्लामी जिहाद और धर्मान्तरण से त्रस्त है। राष्ट्र की अस्मिता की रक्षा के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इस्लामी कट्टरता और आतंकवाद से कड़ाई से निपटने की मांग करती है तो इससे सांप्रदायिकता से जोड़ा जाता है। जबकि हकीकत यह है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जिस हिन्दुत्व की बात की उसका मुख्य उद्देश्य भारतीयों को खुशहाल, समृद्ध, शांतिप्रद भारत के लिए प्रेरित करता है, जहाँ सब के विकास के लिए समाज अवसर उपलब्ध हो, जहाँ सार्वजनिक जीवन में मर्यादा और सुचिता का महत्व हो। परन्तु आज भी एक समुदाय अपने लिए अलग कानून और अदालत की मांग कर रहा है और हमारे देश के तथाकथित सेकुलरवादी लोगों का समर्थन की उसे मिल रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने हमेशा इस बात पर आपत्ति की और इसका विरोध किया। यही कारण है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को हिन्दुवादी कट्टर कहकर सेकुलरवाद के नाम पर विरोध किया जा रहा है। [14]

भारत में एक प्रचलन है कि बहुसंख्यक हिन्दू समाज को उपेक्षित रखना तथा उसके प्रति हीन भावना को हवा देना। तमिलनाडु के सत्ताधरी राजनीतिक दल के नेताओं के द्वारा सनातन को डेंगू, मलेरिया, एड्स जैसे बीमारी तुलना करना और चुनाव हारने के बाद भी तमिलनाडु के विधान सभा में खड़ा होकर विपक्ष का नेता सनातन और हिन्दू धर्म को समाप्त करने की बात करता है। यह सबसे बड़ा उदाहरण है। कई ऐसे उदाहरण है जैसे बहुसंख्यक हिंदू समाज को अपनी शिक्षण संस्था चलाने के अधिकार से वंचित रखना और अल्पसंख्यक खासकर मुस्लिम व ईसाईयों को न केवल यह अधिकार देना बल्कि उनकी संस्थाओं को राज्याश्रय और वित्तीय मदद उपलब्ध कराना। हिन्दू तीर्थस्थलों का अधिग्रहण और उन तीर्थस्थलों से हुई आमदनी से हर साल सैकड़ों करोड़ों रूपये हज सब्सिडी के रूप में बाँट देना। संविधन की धरा–25 (1) के मौलिक अधिकार के द्वारा जबरन और बहला–फुसला कर धर्मान्तरण करवाना क्या सेकुलरवाद की विकृति को उजागर नहीं करते? इस तामम विकृत सेकुलरवाद तथा धर्मान्तरण का विरोध अगर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आज करता है तो यह सांप्रदायिकता है क्यों? राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मानना है कि भारत की मूल संस्कृति और पहचान हिन्दुत्व पर आधरित है। धर्मातरण से यह सांस्कृतिक ढ़ांचा और सामाजिक संतुलन प्रभावित होता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रलोभन के माध्यम से '**लव जिहाद**' और अवैध धर्मांतरण के खिलाफ देश में मुखर होकर हिन्दू एकता की बात करता है।

उपर्युक्त तथ्यों के आधर पर यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आज भारतीय संस्कृति के ध्वजवाहक के रूप में अग्रणी भूमिका का निर्वहन कर रहा है। धरा–25 (1) मौलिक अधिकार के दुरूपयोग तथा धर्मान्तरण के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाने का जो कार्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने किया है वह सराहनीय कदम

है। इसके अलावे भारतीय संस्कृति से जुड़े तमाम मुद्दों के प्रति जो जागरूकता समाज में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माध्यम से फैलाये जा रहे हैं वह हमारे देश के युवा को राष्ट्र के प्रति कर्तव्य बोध करता है, जिसका परिणाम निश्चित रूप से राष्ट्र का विकास तथा भारत की अतुल्य एवं सर्वमान्य संस्कृति का विकास ही होगा।

संदर्भ स्रोत :

1. भारत का संविधन : एक परिचय–डॉú दुर्गा दास बसू, बाध्वा एण्ड कम्पनी प्रकाशक–2002 पृ0सं0–117
2. '**आज**'–दैनिक अखबार, पटना 20 अप्रैल 1999, लेखक पंचानत भारती प्रभाकर–पृ0सं0–08
3. वही–पृ0 सं0–08
4. रजनीश फाउण्डेशन न्यूजलेटर–16 सितम्बर–1979– पृ0सं0–02
5. वही–पृ0 सं0–02
6. वही–पृ0 सं0–03
7. वही–पृ0 सं0–03–04
8. दैनिक समाचार पत्र–हिन्दुस्तान, पटना गुरुवार 14 फरवरी 2002 पृ0सं0–03
9. वही–पृ0 सं0–08
10. दैनिक समाचार पत्र–हिन्दुस्तान, पटना सोमवार 22 अक्टूर 2001 पृ0सं0–10
11. रजनीश फाउण्डेशन न्यूजलेटर–16 मई 1979 पृ0सं0–03
12. वही–पृ0 सं0–03–03–04
13. दैनिक समाचार पत्र–'आज' पटना 20 अप्रैल 1999, लेखक पंचातन भारती प्रभाकर, पृ0सं0–08
14. दैनिक समाचार पत्र–'दैनिक जागरण' 17 पफरवरी 2009, लेखक बलबीर पुंज, पृ0सं0–08

Cite this Article

डा0 मनोरंजन कुमार भारती, "धर्मान्तरण और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ" The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, Pp-564–569, Volume-05, Issue-01, April-2026, https://theresearchdialogue.com/

This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ0 मनोरंजन कुमार भारती

For publication of Research Paper title

धर्मान्तरण और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-01, Month April, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i1.56